International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 435-437

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी– विकास, विचारधारा और नीति

देव राज
चौ. देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

उन्नीसवीं सदी में यूरोपीय विचारकों और आंदोलनों पर मार्क्सवाद का अत्यधिक प्रभाव था, परन्तु भारत में मार्क्सवाद का प्रभाव स्वतंत्रता संघर्ष व आंदोलनों में बीसवीं शताब्दी में स्पष्ट दिखाई देने लगा। मार्क्सवादी नेताओं का मानना था कि कांग्रेस मात्र पूंजीपतियों का ही प्रतिनिधित्व करती है। इसी कारण शोषित वर्ग का प्रतिनिधित्व करने के लिए मार्क्सवादियों ने एक साम्यवादी पार्टी के गठन की आवश्यकता को समझा। भारत में कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना सन् 1925 में करके भारत की स्वतंत्रता, मजदूर, किसान व शोषित–वर्ग के हितों की रक्षा के लिए संघर्ष किए। इस पार्टी का उद्देश्य राजनीतिक, आर्थिक व सामाजिक शोषण से शोषित को मुक्त करवाना था। भारत की कम्युनिस्ट पार्टी ने यह आह्वान किया कि "राजनीतिक स्वतंत्रता एक साधन है और आर्थिक स्वतंत्रता एक लक्ष्य"[1] इस पार्टी ने मार्क्स द्वारा किए गए भौतिकवादी विश्लेषण को जनसामान्य तक पहुंचाने का प्रयास किया। इन्होंने जनसामान्य अर्थात् शोषित वर्ग को यह समझाने का प्रयास किया कि समाजवादी व्यवस्था में ही वे शोषण से मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं।

सन् 1917 में लेनिन के नेतृत्व में हुई रूसी क्रांति ने पूरे विश्व को प्रभावित किया। भारत में भी वर्ग–संघर्ष और वर्ग चेतना के विचार बहुत तेजी से फैलने लगे। इस क्रांति ने संपूर्ण एशिया महाद्वीप में समाजवादी विचारों व जन–आंदोलनों की बाढ़ सी ला दी। सन् 1919 में महेंद्र प्रताप के नेतृत्व में भारत में पहले प्रतिनिधिमंड ने मास्को में लेनिन के साथ मुलाकात की।[2] लेनिन ने इस मुलाकात को बहुत महत्व दिया और इस मुलाकात से एक दिन पहले महेंद्र प्रताप द्वारा भेंट की गई पुस्तक 'प्रेम धर्म' को पढ़ा व मुलाकात के दौरान यह कहा– "हमारे देश में टालस्टॉय वगैरह ने धर्म प्रचार कर लोगों की मुक्ति की चेहरा की थी, किन्तु उसका कोई नतीजा नहीं निकला। आप लोग भी भारत जाकर वर्ग–संघर्ष का प्रचार कीजिए, मुक्ति का रास्ता साफ हो जाएगा।"[3] सन् 1920 में अक्तूबर माह में ताशकंद में भारत की कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की।[4] मुहाजिर शरणार्थियों के जत्थे जो भारतीय मुस्लमान थे प्रथम विश्व युद्ध के बाद तुर्की की स्थिति से चिंतित होकर सोवियत देश में पहुंचे, क्योंकि तुर्की में अंग्रेजों ने खिलाफत प्रथा का अंत कर दिया था। इसके विरोध में 1920 में दिल्ली में हुई कांफ्रेस में हिजरत करने पर बल दिया गया।[5] जब किसी देश की जनता अत्याचार के कारण देश छोड़कर चली जाए तो उसे हिजरत कहते हैं। मुहाजिर तुर्की की सेना में भर्ती होने के लिए भारत छोड़कर जाने लगे। वे किसी ऐसे देश में जाना चाहते थे जहां मुस्लिम राज हो। अफगानिस्तान गए मुहाजिरो की संख्या 36000 थी।[6] इनमें से अधिकतर धार्मिक कारणों से व कुछ नौजवान भारत से बाहर जाकर भारत को ब्रिटिश राज से मुक्त करवाने के लिए गए थे।[7] अफगानिस्तान में मौलाना अब्दुल्ला सिंधी अकुल रब और आचार्य ने इन्हें सोवियत रूस जाने की सलाह दी।[8] भारत की कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य के रूप में ताशकंद में 1920 तक 80 मुहाजिर रूस पहुंच चुके थे।

सन् 1920 के बाद भारत में कम्युनिस्ट गतिविधियां बढ़ने लगी। 1922 तक बंबई, कलकता, मद्रास, लाहौर, कानपुर आदि प्रमुख महानगरों में कम्युनिस्ट केंद्र स्थापित हो गए। बंबई ग्रुप के नेता अमृत डांगे ने 1921 में गांधी बनाम कम्युनिस्ट पुस्तिका भी लिखी। इसके अतिरिक्त वे एक अंग्रेजी साप्ताहिक 'सोशलिस्ट' का भी संपादन करने लगे और मजदूर आंदोलनों में सक्रिय भाग लेना शुरु कर दिया।[9] उत्तर प्रदेश के कम्युनिस्ट नेताओं ने 1 सितम्बर 1924 को कानपुर में 'भारतीय साम्यवादी दल' की स्थापना की। सन् 1925 तक इसके सदस्यों की संख्या 250 तक पहुंच गई थी।[10] पार्टी का एक संविधान तैयार किया गया व पार्टी का नाम 'भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी' रखा गया। पार्टी के उद्देश्य घोषित किए गए– सम्पूर्ण स्वराज्य को प्राप्त करना व एक ऐसे समाज की स्थापना करना जहां उत्पादन व धन के वितरण का स्वामित्व सामूहिक हो।[11] 27 दिसम्बर 1925 को विधिवत रूप से 'भारत की कम्युनिस्ट पार्टी' की स्थापना हुई। इसकी स्थापना पर 'ब्रिटिश राज मुर्दाबाद' व 'स्वाधीन भारत जिन्दाबाद' के नारे लगाए गए, जबकि पूंजीपति वर्ग की पार्टियों की स्थापना 'महारानी विक्टोरिया की जय' और 'ब्रिटिश राज जिंदाबाद' के नारों के साथ होती थी।

25 से 27 दिसम्बर 1925 को कानपुर में प्रथम साम्यवादी कांफ्रेस हुई। इसमें लाहौर के शम्सुद्दीन हसन, मद्रास के मायलापुरम सिंगारावेलू चेट्टियार और कृष्णास्वामी आयंगर, बंबई के आर0एस0 नांबियार, एस वी घाटे, के0 एन0 जोगलेकर, झांसी के अयोध्याप्रसाद, बीकानेर के जानकी प्रसाद बागेरहट्टा और मुजफ्फर अहमद ने भाग लिया। मुजफ्फर अहमद टी0बी0 की बिमारी के कारण उसी समय जेल से रिहा होकर आए थे। कांफ्रेस में मुजफ्फर अहमद व नलिन गुप्त ने सत्यभक्त के इन विचारों से असहमति प्रकट की कि भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी राष्ट्रवादी थी और इसका कम्युनिस्ट इंटरनेशनल से कोई संबंध न था। उन्होंने कहा कि कम्युनिस्ट इंटरनेशनल के नियमों के अनुसार पार्टी का नाम भारत की कम्युनिस्ट पार्टी होना चाहिए। सत्यभक्त कांफ्रेस में अल्पमत में रह गए और कांफ्रेस बीच में ही छोड़कर चले गए। उन्होनें पार्टी से त्यागपत्र देकर राजनीति को भी त्याग दिया।

अब कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने भारत के विभिन्न हिस्सों में स्थापित कम्युनिस्ट ग्रुपों को एकत्रित व संगठित किया। लोगों में क्रांतिकारी भावनाओं का प्रचार भी करना आरंभ किया। इस पार्टी ने मजदूरों व किसानों के मध्य तेजी से काम करना और जन–आंदोलनों का नेतृत्व करना आरंभ कर दिया और सन् 1926 में सांप्रदायिक दंगों के खिलाफ एक घोषणा–पत्र भी निकाला और एकता की अपील की। कम्युनिस्टों की इस बढ़ती हुई गतिविधियों के बाद भी सन् 1926 के पूर्वाद्ध तक कम्युनिस्ट धन की कमी के

कारण बहुत सीमित थे। सन् 1925–27 के दौरान भारत में मजदूर किसान पार्टियां गठित की गई, जिनका उद्देश्य कम्युनिस्टों के उद्देश्यों को पूरा करना था। सन् 1924–25 एम0एन0 राय का प्रभाव कम हो गया था और उनके स्थान पर ग्रेट ब्रिटेन की कम्युनिस्ट पार्टी भारत की कम्युनिस्ट आंदोलनों को दिशा–निर्देश देने लगी।[12] इन पार्टियों के गठन का सुझाव ग्रेट–ब्रिटेन की कम्युनिस्ट पार्टी के फिलिप स्पार्ट ने दिया जो दिसम्बर 1926 में भारत आए थे। उन्होंने भारत के क्रांतिकारियों, मुज्फ्फर अहमद, घाटे तथा अन्य लोगों से भेंट की और उन्हें मजदूरों व किसानों की पार्टी गठित करने का सुझाव दिया ताकि इसकी आड़ में वे अपनी गतिविधियां जारी रख सके। एम0एन0 राय ने भी भारतीय कम्युनिस्टों को एक 'लोगों की पार्टी' बनाने की सलाह दी थी। मास्को व पीटरग्राद में सन् 1922 में हुए चौथे कम्युनिस्ट इंटरनेशनल में उन्होंने कहा था कि भारत की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता एक जनसंगठन के निर्माण की थी। यद्यपि कम्युनिस्ट इंटरनेशनल ने राय के इस विचार को ठीक नहीं माना था, परंतु ऐसे दलों का निर्माण भारत में अपने आप होने लगा। फिर इंटरनेशनल ने उनके गठन का विरोध नहीं किया बल्कि उन्हें प्रोत्साहित ही किया।[13] 'असेंबली लेटर' नाम से जाने वाले अधिनियम में एम0एन0राय ने भारतीय कम्युनिस्टों से कहा था कि हमें भारत में दो पार्टियों को बनाने की आवश्यकता है "किसान–मजदूर पार्टी" व "कम्युनिस्ट पार्टी"। कम्युनिस्ट पार्टी के लिए खुलकर काम करना संभव नही था, अतः मजदूरों, किसानों व श्रमजीवी वर्ग के हितों की रक्षा के लिए 'किसान–मजदूर पार्टी' का गठन जरुरी था।[14]

एम0एन0 राय ने यह सुझाव दिया कि मजदूर–किसान पार्टी को अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अपना संबंध मास्को से स्थापित करके साम्राज्यवाद विरोधी पार्टियों से करना चाहिए। इसी पृष्ठभूमि में सन् 1925–27 में भारत के विभिन्न भागों में मजदूर किसान पार्टियों की स्थापना हुई। मुजफ्फर अहमद के अनुसार इन पार्टियों के गठन का कारण ग्रेट ब्रिटेन की कम्युनिस्ट पार्टी या कम्युनिस्ट इंटरनेशनल या एम0एन0 राय नहीं थे, उनके विचार में इस तरह की पार्टी बनाने का श्रेय काज़ी नजरुल इस्लाम और शम्सुद्दीन को था।[15] काज़ी नजरुल इस्लाम और शम्सुद्दीन के विचारों से प्रभावित होकर बंगाल, बंबई, पंजाब और उत्तर प्रदेश के प्रगतिशील मजदूर और किसान नेताओं ने केंद्रीय स्तर से लेकर प्रांतीय स्तर तक ऐसी पार्टी का गठन करने का प्रयास आरंभ कर दिया जिसका नेतृत्व मजदूरों और किसानों के हाथों में रहे। मजदूर किसान पार्टी की स्थापना सबसे पहले बंगाल में 'लेबर स्वराज पार्टी' के नाम से हुई। सन् 1928 में इसका नाम 'मजदूर–किसान पार्टी' रख दिया गया। मजदूर किसान पार्टी के कार्यक्रमों को निर्धारित करने में कम्युनिस्टों का हाथ था।[16]

कम्युनिस्टों ने मजदूर आंदोलनों में जितनी अधिक सफलता प्राप्त की उतनी सफलता उन्हें राजनीतिक क्षेत्र में नहीं प्राप्त हो सकी। इसके कई कारणों में से एक सरकार एक के बाद एक मुकद्दमें षड्यंत्र के तहत उन पर चलाती रही जिससे पार्टी के नेताओं को पार्टी के संगठन को मजबूत करने का समय बहुत कम मिला। दूसरा पार्टी के मजदूर अशिक्षित थे। अतः राजनीतिक क्षेत्र में आगे न बढ़ सकी। तीसरा मुजफ्फर अहमद के अनुसार धन की कमी के कारण पार्टी का राजनीतिक प्रचार–प्रसार न हो सका। चौथा इस समय तक कम्युनिस्ट पार्टी एक सही राजनीतिक समझ या लाइन नहीं हासिल कर पाई। विदेश में बनी भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी भी समय–समय पर अपनी लाइन बदलती रही। पांचवा भारत में मौजूद जातिवाद और सांप्रदायिकता ने भी कम्युनिस्ट पार्टी के मार्ग में कदम–कदम पर रुकावटें खड़ी की। किन्तु इन सारी कमियों व कठिनाईयों के बावजूद भी पार्टी मार्क्सवादी–लेनिनवादी विचारों से लोगों को अवगत करवाने का प्रयास करती रही। इसने अपने विचार लोगों तक पहुंचाने के लिए मई दिवस, लेनिन दिवस, रूसी क्रांति विजय दिवस आदि साधनों के द्वारा प्रचार–प्रसार किया। इन सभाओं में हजारों लोग एकत्रित होते थे। कम्युनिस्टों ने पर्चे व अखबार भी निकाले। उन्होंने अपना प्रभाव नौजवानों व छात्रों पर भी डाला। नौजवान क्रांतिकारी भगत सिंह बाद में जेल में मार्क्सवादी साहित्य के अध्ययन से कम्युनिस्ट हो गए थे। वे देश के लिए हंसते–हंसते फांसी के कंदे पर झूल गए । उनकी शहादत ने देश के नौजवानों में क्रांतिकारी भावनाएं भर दी थी।

सन् 1931 से 1934 तक कम्युनिस्ट पार्टी के रेड ट्रेड यूनियन कांग्रेस ने मजदूरों, किसानों, नौजवानों व अन्य श्रमजीवी वर्गों को संगठित करके इनके आंदोलनों का नेतृत्व भी किया। विशेषतः मजदूर आंदोलनों में इसने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इनके बढ़ते प्रभाव से ब्रिटिश सरकार बहुत चिंतित हो उठी। उसने अपनी गुप्त रिपार्टों में स्वीकार किया कि कम्युनिस्ट नेताओं के जेल में बंद होने के बावजूद उनका प्रभाव निरंतर बढ़ रहा था।[17] सन् 1934 में 159 हड़तालें हुई, जिनमें 220808 मजदूरों ने भाग लिया। अनेक मिलों में हड़तालें हुई। बढ़ती हड़ताले मजदूर वर्ग में बढ़ती चेतना का परिणाम थी। ब्रिटिश सरकार की चिंता इससे बढ़ती जा रही थी। सरकार ने अपनी गुप्त रिपोर्टों में स्वीकार किया कि ये हड़तालें सिर्फ आर्थिक ही नहीं बल्कि राजनीतिक थी और इनके पीछे कम्युनिस्टों का प्रभाव व प्रेरणा काम कर रहे थे।[18] अतः कम्युनिस्टों की बढ़ती गतिविधियों और प्रभाव को रोकने के लिए ब्रिटिश सरकार ने दमन का रास्ता अपनाया और अनेक कम्युनिस्ट नेताओं को जेल में बंद कर भारत की कम्युनिस्ट पार्टी को गैर कानूनी घोषित कर दिया।

निष्कर्षतः

हम कह सकते हैं कि भारत की कम्युनिस्ट पार्टी ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसने आरंभ से ही भारत की स्वतंत्रता की मांग उठाई। इसे यह विश्वास था कि सामाजिक मुक्ति राष्ट्रीय मुक्ति के बिना संभव नहीं है। इसने राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ–साथ आर्थिक स्वतंत्रता पर बल दिया और लोगों को यह समझाया कि आर्थिक स्वतंत्रता के बिना राजनीतिक स्वतंत्रता अर्थहीन है। पार्टी ने भारत में वैज्ञानिक समाजवाद का प्रचार किया। इसने बताया कि उत्पादन के साधनों का मालिक व्यक्ति नहीं समाज को होना चाहिए। इसने वयस्क मतदान के द्वारा संविधान–सभा बनाने की मांग की। इसने विदेशी–पूंजी के राष्ट्रीयकरण, रजवाड़ों के खात्मे और भूमि को उसे जोतने वालों को दिए जाने की मांग भी की। यह पार्टी जनता के बीच रहकर काम करती रही और लोगो में स्वतंत्रता प्राप्ति की चेतना जाग्रत करने का प्रयास करती रही। इसने स्वतंत्रता से पहले दो प्रकार से काम किए– जब यह गैर कानूनी घोषित कर दी गई तो इने कांग्रेस के अंदर शामिल होकर एक साम्राज्यवाद विरोधी राष्ट्रीय मोर्चा बनाने का प्रयास किया और दूसरे इसने एक स्वतंत्र संगठन के रूप में लोगों में वर्ग चेतना जगाने का काम मजदूर संघो, किसान सभाओं, नौजवानों, महिलाओं और छात्रों के संगठनों के द्वारा किया। कम्युनिस्ट पार्टी ने साम्राज्यवाद के विरोध के साथ–साथ पूंजीवाद और सामंतवाद का भी विरोध किया। यह साम्राज्यवादी शोषण और भारतीय पूंजीपतियों व सामंतों द्वारा श्रमजीवियों के शोषण के खिलाफ लड़ती रही और इसने लोगों को एक शोषण रहित समाज स्थापित करने के लिए प्रेरित किया। इसी

कारण इसे सबसे अधिक दमन व यातनाओं का सामना करना पड़ा। ब्रिटिश साम्राज्यवादी इनके साहस को तोड़ने में असफल रहे। कम्युनिस्टों ने भारत में समाजवादी अंतर्राष्ट्रीयतावाद की नीति को अपनाया। उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्यवाद की कड़ी आलोचना की, परंतु भारत व ब्रिटेन के लोगों के बीच मित्रता पर विश्वास रखा व उस पर बल दिया। उन्होंने दुनिया के सभी मेहनतकशों की एकता पर बल दिया। कम्युनिस्ट पार्टी ने शिक्षा व संस्कृति के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। उसने लोगों मे वैज्ञानिक दृष्टिकोण पैदा करने का प्रयास किया। वह भी एक ऐसे देश में जहां लोगों का धर्म, जातिवाद और परंपरागत मूल्यों में अटल विश्वास हो, जहां अंधविश्वास व भाग्यवाद पागलपन की हद तक पाया जाता हो, वहां कम्युनिस्टों का यह काम बहुत कठिन था, परंतु वे इसके विरुद्ध लड़ते रहे। उन्होंने छूआछूत और सांप्रदायिकता जैसे बुराईयों को समाप्त करने के भी प्रयास किए।

अंततः हम कह सकते हैं कि भारत की कम्युनिस्ट पार्टी ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसी पार्टी ने सबसे पहले भारत की स्वतंत्रता की मांग की। लाखों अशिक्षित श्रमिक वर्ग को स्वतंत्रता के आंदोलन से जोड़ने का सफल प्रयास किया। आज भी भारत के शोषित श्रमिक कम्युनिस्टों के नेतृत्व में एक ऐसे समाज की स्थापना के लिए संघर्षरत हैं जहां इन्सान, इन्सान को लूट न सके।

संदर्भ सूची

1. अवतार सिंह, What is The Communist Party? पृष्ठ–34
2. अयोध्या सिंह, Indian Freedom Struggle पृष्ठ–475
3. जी. अधिकारी, Document of the History of Communisty Party of India Vol-I पृष्ठ–18–19
4. जी. अधिकारी, पृष्ठ–16 व Ibid पृष्ठ 16 और पृष्ठ 12
5. मुजफ्फर अहमद, The communist Party of India and its formation Abroad पृष्ठ 13
6. जी. अधिकारी, op. cit, vol.I, पृ0 37
7. मुजफ्फर अहमद, The Communist Party of India and its formation Abroad पृष्ठ–16
8. अयोध्या सिंह, Indian Freedom Struggle पृष्ठ–478
9. विंडमिल्लर पृ. 43
10. Petrie, op. cit, पृष्ठ 159–160
11. एल0पी0सिंह, op. cit. पृष्ठ–156
12. Ibid पृष्ठ 86
13. एल0पी0सिंह, op. cit. पृष्ठ–177
14. विंडमिल्लर पृ. 102–104
15. मुजफ्फर अहमद, The Communist Party of India and Its Formation Abroad पृष्ठ–153
16. मुजफ्फर अहमद, Communist Party of India, Years of formation पृष्ठ–24
17. रजनी पाम दत्त, आज का भारत पृ0 431
18. सुबोध रॉय, op.cit. पृष्ठ 189